

वह लेखिका जिसने कभी लिखा ही नहीं

जो पहली बातें मुझे समझ आईं, उनमें से एक थी कि प्रकाशन व्यवसाय शुद्ध कथा को कभी अछूता नहीं छोड़ेगा। देर-सवेर, पैसा उस व्यवस्था को सिखा देगा कि विश्वसनीयता कैसे गढ़ी जाती है।

आज किसी का पर्दाफाश हुआ। उसने कोई उपन्यास नहीं चुराया। उसने वह शब्द चुराया जो उसे कहता है।

एक स्त्री एक किताब छापती है। वह उसे अपना पहला रोमांस उपन्यास कहती है। एक वीडियो में, लगभग आँसुओं में, वह अपने दर्शकों से कहती है: “मैंने इसे खुद लिखा। मैंने बस एआई से इसे सुधारवाया। विचार पूरी तरह मेरा था।”

लोग उस पर यक़ीन करते हैं। वे तालियां बजाते हैं। फिर उन्हें पता चलता है कि “सुधारने” का मतलब कुछ बहुत अलग था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कॉमा नहीं सुधारे। उसने किताब लिखी। उसने बस अनुरोध लिखा था।

मेरा अपना रास्ता कभी प्रचार केलिए नहीं बना था। वह कुछ बहुत कम आकर्षक चीज़ केलिए बना था: जो मैं बयान करता हूँ उसकी पूरी कीमत चुकाना।

अठारह साल एक असली कम्पनी केभीतर। कोई विचार नहीं जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता से फैलाया गया हो, बल्कि एक जीवन जिसे उस पिता ने फैलाया जिसने मुझसे पहले अपने ही चालीस साल लगा दिए थे।

लिखने वाले इंसान को लिखवाने वाले इंसान से क्या अलग करता है? तकनीक नहीं। तकनीक बस एक औज़ार है, १००० केदशक केटाइपराइटर से अलग नहीं। असली फ़र्क यह है कि क्या शब्दों केपीछे कोई देह है। एक देह जो उस सबसे गुज़री जो शब्द बयान करते हैं। एक देह जिसने हर वाक्य की क्रीमत सालों, ग़लतियों, अनुशासन, त्याग, जीत और हार से चुकाई।

उसकी किताब प्रेम केवादे केरूप में बेची जाती है। एक गारंटीशुदा सफलता। क्योंकि प्रचार का सबसे पुराना रूप हमेशा वही रहा है: धोखा।

लोग इसे शायद ही पहचानते हैं। वे बस इससे मोहित हो जाते हैं।

यही ठीक वजह है कि मेरी कथा एक अलग नारा लिए हुए है: “वह बिल जो वक्त उन्हें थमाता है जिन्हें लगा था कि वे इसे बाद में चुका देंगे।”

मैं कभी मशहूर नहीं बनूंगा। मैं कभी अमीर नहीं बनूंगा। पर मुझे भुलाना नामुमकिन होगा।

फ़र्दिनान्दो फ़्रेगा

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com